आकाश IAS

Shaping Your Dreams

प्राचीन भारत का इतिहास

प्रारंभिक परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण

160/4, A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)
mail.: aakarias2014@gmail.com, web.: www.aakarias.com
Call.: 9713300123, 9752839772

विषय सूची (CONTENTS)

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
01	इतिहास के अध्ययन के स्रोत	01 – 02
02	प्राक् ऐतिहासिक काल	03 – 07
03	ताम्रपाषाण काल (2000 – 500 ई. पू.)	08 – 09
04	मृदभांड संस्कृति	10
05	सिन्धु घाटी सभ्यता (2500 ई. पू. – 1800 ई. पू.)	11 – 19
06	वैदिक संस्कृति (1500 ई. पू. – 600 ई. पू.)	20 – 23
07	वैदिक साहित्य	24 – 25
08	उत्तर वैदिक साहित्य	26 – 27
09	वैदिकोत्तर साहित्य	28
10	ऋग्वैदिककाल (1500 ई. पू. – 1000 ई. पू)	29 – 33
11	उत्तरवैदिक काल (1000 ई. पू. – 600 ई. पू.)	34 – 39
12	छठी सदी ई. पू. से तीसरी सदी ई. पू. तक का इतिहास	40 – 42
13	महाकाव्य काल	43
14	महाजनपद काल	44 – 49
15	विदेशी आक्रमण	50 – 51
16	जैन धर्म	52 – 56
17	बौद्ध धर्म	57 – 62
18	मौर्य साम्राज्य	63 – 67
19	अशोक के अभिलेख	68 – 71
20	चन्द्रगुप्त मौर्य (322 ई.पू.–298 ई. पू.)	72
21	बिन्दुसार (298 ई. पू.–273 ई. पू.)	73
22	अशोक (273 ई. पू. – 232 ई. पू.)	74 – 75
23	मौर्यकालीन प्रशासन	76 – 83
24	मौर्योत्तरकाल	84
25	विदेशी शासक	85 – 89
26	भारतीय शासक	90 – 95
27	संगम युग	96 – 100
28	गुप्तकाल	101 – 105
29	परवर्ती गुप्त	106

30	गुप्तकालीन संस्कृति	107 – 117
31	स्थानेश्वर का पुष्यभूति वंश	118 – 119
32	त्रि-कोणात्मक संघर्ष	120
33	राजपूत राजवंश	121 – 127
34	दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश	128 – 138
35	बंगाल के राजवंश	139 – 140
36	कश्मीर के राजवंश	141 – 142
37	मंदिर स्थापत्य	143 – 152

इतिहास के अध्ययन के स्रोत

इतिहास संस्कृत भाषा में इति + ह + आस से मिलकर बना है। इसका अर्थ है, जो ऐसा (घटा) था, अर्थात् – भूतकाल में घटित घटनाएं या उससे सम्बन्धित व्यक्तियों का विवरण। मानव अपने अतीत के सम्बन्ध में जिज्ञासु रहा है। मनुष्य अपने निवास स्थल के समीप **निर्मित भवनों**, **दुर्गों**, **मंदिरों**, **तालाबों** व **बावड़ियों** आदि पुरातात्विक सामग्री के अवशेषों से वहां अपनी प्राचीनता का अनुमान लगाता है। इतिहास के अध्ययन से मानव के क्रमिक विकास की जानकारी मिलती है।

इतिहासकार प्राचीनकाल की जानकारी के लिए कुछ निश्चित साधनों की मदद लेते हैं। ये साधन उस काल के औजार, जीवाश्म, पात्र, भोजपत्र, आभूषण, इमारतें, सिक्के, अभिलेख, चित्र, यात्रियों द्वारा लिखे यात्रा विवरण तथा तत्कालीन साहित्य आदि हैं। इन साधनों को इतिहास जानने के स्रोत कहते हैं, जिन्हें मुख्यरूप से 02 वर्गों में बांटा गया है – **पुरातात्विक स्रोत** एवं **साहित्यिक स्रोत**।

महत्वपूर्ण तथ्य

- **शिलालेख :** पत्थरों पर खोद कर लिखी गई बातों को शिलालेख कहते हैं।
- **भोजपत्र :** एक विशेष प्रकार के वृक्ष की छाल जिस पर प्राचीन ग्रंथ आदि लिखे जाते हैं।
- **ताड़पत्र :** ताल वृक्ष के पत्तों पर रंग या स्याही से लिखी गई बातों वाले पत्र को तालपत्र कहते हैं।
- **ताम्रपत्र :** ताँबे के पत्तरों पर खोद कर लिखी गई बातों वाले ताँबे के पत्तरों को ताम्रपत्र कहते हैं।
- **जीवाश्म :** प्राचीन जीव, मनुष्य, जानवरों की हड्डियां, जो पाषाण के रूप में परिवर्तित होना प्रारंभ हो जाती हैं।
- **पुरातत्ववेत्ता :** वे व्यक्ति, जो पुरानी वस्तुओं स्थलों की खोज करते हैं और उनके बारे में सही तथ्यों का पता लगाते हैं।

अधिकांश शिलालेख **संस्कृत**, **प्राकृत**, **पाली** एवं **तमिल भाषा** में है तथा **ब्राह्मी लिपि** में लिखे गए हैं, इसलिए इन्हें पढ़ना कठिन होता है, लेकिन कुछ लिपि शास्त्री और पुरातत्ववेत्ता इन्हें पढ़ लेते हैं।

मानव को जब लिपि का ज्ञान नहीं था, तब उस समय वे चित्रों के माध्यम से अपनी बातें शीलाओं पर चित्रित करते थे। इन चित्रों को **शैल चित्र** कहते हैं। मध्य प्रदेश में भोपाल के पास **भीमबेटका** के शैल चित्र इस बात के जीवन प्रमाण हैं। शैल चित्र भारत के विभिन्न भागों में मिलते हैं। भीमबेटका विश्व का सबसे बड़ा शैल चित्र स्थल है। इसकी खोज पद्मश्री **डॉ. श्री वाकणकर** द्वारा की गई थी। इस स्थल को **विश्व धरोहर सूची** में सम्मिलित किया गया है।

भारत के लगभग तीन-चौथाई शैल चित्र मध्य प्रदेश में विन्ध्याचल और सतपुड़ा की पहाड़ियों में मिलते हैं। भवन तथा अन्य स्रोत मानव के गणितीय ज्ञान व स्थापत्य कला के विकास की कहानी से परिचय कराते हैं। साहित्यिक स्रोत तत्कालीन समय की विभिन्न बातों पर प्रकाश डालते हैं। प्राचीन समय के ग्रंथ, जैसे – **वेद**, **पुराण**, **रामायण**, **महाभारत**, **संगम साहित्य** और **त्रिपिटक** आदि उस समय के समाज नगरों, रीति-रिवाजों और संस्कृति के बारे में प्रकाश डालते हैं। इन ग्रंथों में तात्कालीक सामाजिक व्यवस्था, जैसे – विवाह, सती प्रथा, नियोग प्रथा आदि का वर्णन मिलता है।

मत्स्य एवं वायु पुराण में सातवाहन एवं मौर्य वंश की वंशावलियां का उल्लेख है। संगम साहित्य से दक्षिण भारत में प्रचलित सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त होता है। प्राचीनकाल के भवन, महल, मंदिर, चर्च, किले, बावड़ी आदि उस समय की कला-संस्कृति, समृद्धि, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक स्थिति की जानकारी देते हैं। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में निर्मित तालाब एवं बावड़ियां भी इतिहास के अध्ययन के महत्वपूर्ण स्रोत हैं, क्योंकि तालाबों एवं बावड़ियों से जल की उपलब्धता का ज्ञान होता है। साथ ही शासक के सामाजिक उत्तरदायित्व एवं लोककल्याण की अवधारणा का भी आभास होता है।

पुरातात्विक साक्ष्यों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह लगभग अपरिवर्तनशील एवं स्थायी होते हैं। सिक्कों के माध्यम से किसी भी राज्य की आर्थिक व्यवस्था, साम्राज्य विस्तार तथा संबंधित शासकों का ज्ञान प्राप्त होता है। साथ ही सिक्कों के निर्माण में इस्तेमाल धातुएं एवं तकनीकी से तात्कालीक समय के वैज्ञानिक विकास का पता चलता है।

इसी प्रकार मंदिर तत्कालीक समय से संबंधित कला, तकनीकी एवं धर्म का बोध कराते हैं। भवन एवं महल भी इतिहास की व्याख्या के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। महलों एवं भवनों का आकार वास्तुकला एवं आर्थिक स्थिति की ओर इंगित करते हैं। महलों की विशालता राज्य की आर्थिक समृद्धता के साथ-साथ शासक की सोच एवं तकनीकी कौशल एवं समन्वय को इंगित करता है।

शिलालेखों के माध्यम से शिलालेख जारी करने वाले शासक का समय-काल तथा प्रचलित लिपि व भाषा का भी ज्ञान होता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पाए जाने वाले शिलालेख संबंधित शासक के साम्राज्य विस्तार का वर्णन करते हैं। जैसे - शिलालेखों के माध्यम से अशोक के साम्राज्य का ज्ञान प्राप्त होता है, जो पश्चिम में अफगानिस्तान से लेकर पूर्व में बंगाल तक तथा उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कर्नाटक व तमिलनाडु जैसे राज्यों तक विस्तृत था।

शिलालेखों में उत्कीर्ण लेखों से राज्य की राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त होता है, जैसे - अशोक के अभिलेखों एवं रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में लोककल्याण के कार्यों का वर्णन मिलता है। उसी प्रकार स्कंदगुप्त के भितरी अभिलेख से हूणों के आक्रमण की जानकारी मिलती है।

यूनानी यात्री **मेगास्थनीज**, चीनी यात्री **ह्वेनसांग**, **फाह्यान** एवं **इत्सिंग** सहित अन्य देशों के यात्रियों ने हमारे देश की यात्रा की तथा उनके द्वारा लिखे गए यात्रा-विवरण से हमें उस समय की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी मिलती है। मेगास्थनीज के पुस्तक इंडिका में राजनीति, सामाजिक व्यवस्था का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है, जो मौर्य काल से संबंधित है। मेगास्थनीज के द्वारा मौर्यों की राजधानी पोलीब्रोथा (पाटलिपुत्र) की लंबाई-चौड़ाई के साथ-साथ सम्पूर्ण नगर विन्यास का उल्लेख किया गया है। इसी प्रकार मेगास्थनीज ने नगर प्रशासन से संबंधित समितियों एवं अधिकारियों का वर्णन किया है। साथ ही राजा की सुरक्षा से संबंधित महिला अंगरक्षिकाओं का भी उल्लेख है। मेगास्थनीज भारत की सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत 7 जातियों का उल्लेख करता है। साथ ही अकाल, इतिहास लेखन एवं कर व्यवस्था पर भी प्रकाश डालता है।

इसी तरह फाह्यान गुप्तकालीन सामजिक एवं आर्थिक व्यवस्था का उल्लेख करता है, जिसके अन्तर्गत वह कौड़ियों एवं चाण्डाल के रूप में अस्पृश्यता के प्रचलन का वर्णन करता है।

ह्वेनसांग भी हर्षकालीन राजनीतिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था का वर्णन करता है। ह्वेनसांग हर्ष के सैन्य अभियानों का विस्तारपूर्वक व्याख्या करता है। साथ ही हर्ष के काल में कन्नौज में आयोजित धर्मसभा एवं प्रयाग में आयोजित महामोक्ष परिषद् का वर्णन करता है।

समय के प्रवाह के साथ-साथ व्यापार वाणिज्य ने अपनी जगह बनाई। व्यापारी एक स्थान से दूसरे स्थान पर गए, आपसी मेल-मिलाप हुआ और लेन-देन बढ़ा। संस्कृति का परिवर्तन क्रम शुरू हुआ। भाषा एवं लिपि एक स्थान से दूसरे स्थान पर गई तथा विभिन्न भाषाओं के मिश्रण से नई भाषाओं ने जन्म लिया। जीवन के क्षेत्रों में परिवर्तन शुरू होकर जीवन मूल्य में परिवर्तन का दौर शुरू हुआ।

प्राक् ऐतिहासिक काल

भू-वैज्ञानिक दृष्टि से पृथ्वी लगभग 4.6 अरब वर्ष प्राचीन है तथा इसमें जीवन की उत्पत्ति लगभग 3.5 अरब वर्ष पूर्व हुई थी। परन्तु इस काल में छोटे-छोटे जीव-जन्तुओं का ही विकास हो पाया था। आज से लगभग 2 करोड़ वर्ष पूर्व महाकपी की प्रजाति रामापिथेकस का प्रसार दो शाखाओं में हो गया। रामापिथेकस की जो प्रजाति जंगल में रह गई, उसका विकास बंदरों के रूप में हो गया। जबकि रामापिथेकस की जो प्रजाति मैदान में आ गई, उनका विकास आदिम मानव (होमोनिड), अर्थात् - ऑस्ट्रेलोपिथेकस के रूप में हो गया।

आदिम मानव के जीवाश्म के प्राचीनतम् साक्ष्य ऑफ्रीका से प्राप्त होते हैं, जो लगभग 25 लाख वर्ष पूर्व के हैं। भारत से आदिम मानव के जीवाश्म प्राप्त नहीं होते, परन्तु उसके द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले प्रस्तर उपरकरणों से भारत में आदिम मानव की उपस्थिति का समय लगभग 5 लाख ई. पू. माना जाता है। हालांकि हाल ही में महाराष्ट्र के बोरी नामक स्थान से मिले प्रस्तर उपकरणों के आधार पर भारत में आदिम मानव की उपस्थित लगभग 14 लाख वर्ष पूर्व मानी जा सकती है। यहां उल्लेखनीय है कि **भारत** में रामापिथेकस के **जीवाश्म शिवालिक की पहाड़ियों** (रवात घाटी, पाकिस्तान) से प्राप्त हुए हैं।

संक्षेप में मानव के विकास को इस प्रकार से समझा जा सकता है -

रामापिथेकस ⟶ ऑस्ट्रेलोपिथेकस ⟶ होमोइरेक्टस ⟶ नियाण्डरथेल ⟶ क्रोमेग्नन अर्थात् होमोसेपियंस

होमोसेपियन्स (क्रोमेग्नन) को ही **आधुनिक मानव** (पूर्ण मानव) माना जाता है, जिसकी उत्पत्ति का समय 30-40 हजार वर्ष पूर्व माना जाता है। इस प्रकार होमोसेपियन्स का उद्भव अत्यन्त नूतन युग (Pleistoscene Epoch) में हुआ।

इतिहास का विभाजन

प्राक्-ऐतिहासिक काल
(25 लाख ई. पू. से 3 हजार ई. पू.)
जिस काल की जानकारी के लिए हमारे पास केवल पुरातात्विक साक्ष्य ही उपलब्ध हो। अर्थात वह काल जिसमें लिपि अनुपलब्ध हो

- **पुरापाषाणकाल** (25 लाख ई. पू. से 10 हजार ई. पू.)
- **मध्यपाषाणकाल** (10 हजार ई. पू. से 6 हजार ई. पू.)
- **नवपाषाणकाल** (6 हजार ई. पू. से 3 हजार ई. पू.)

आद्य-ऐतिहासिक काल
(3 हजार ई. पू. से 6 सौ ई. पू.)
जिस काल की जानकारी के लिए हमारे पास पुरातात्विक साक्ष्य के साथ-साथ साहित्यिक स्रोत भी उपलब्ध हो। किन्तु इनमें से किसी एक का प्रयोग ही संभव हो पाया हो

- **हड़प्पा सभ्यता** (2500 ई. पू. से 1800 ई. पू.)
- **वैदिक संस्कृति** (1500 ई. पू. से 600 ई. पू.)

ऐतिहासिक काल
(6 सौ ई. पू. से आज तक)
जिस काल की जानकारी के लिए हमारे पास पुरातात्विक साक्ष्य के साथ-साथ साहित्यिक स्रोत भी उपलब्ध हो और उनका प्रयोग भी संभव हो

❐ पुरापाषाणकाल

भारतीय पुरापाषाणकाल को मानव द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले **पत्थर के औजारों के स्वरूप** एवं **जलवायु में होने वाले परिवर्तनों** के आधार पर 3 अवस्थाओं में विभाजित किया जाता है –

- पूर्व पुरापाषाणकाल (5 लाख से 50 हजार ई. पू.)।
- मध्य पुरापाषाणकाल (50 हजार से 40 हजार ई. पू.)।
- उच्च पुरापाषाणकाल (40 हजार से 10 हजार ई. पू.)।

◆ पूर्व पुरापाषाणकाल (5 लाख से 50 हजार ई. पू.)

इसे निम्न पुरापाषाणकाल भी कहते हैं। इस काल में मानव को कृषि एवं पशुपालन का ज्ञान नहीं था। मानव आखेटक एवं खाद्यसंग्राहक था, वह केवल बड़े पशुओं का ही शिकार कर सकता था।

महत्वपूर्ण तथ्य

– सोहन संस्कृति	:	पाकिस्तान
– हैण्डएक्स संस्कृति	:	मद्रास
– फलक संस्कृति	:	मध्य पुरापाषाणकाल
– ब्लेड संस्कृति	:	उच्च पुरापाषाणकाल
– सूक्ष्म पाषाणकाल	:	मध्य पाषाणकाल

इस काल में मानव **क्वार्टजाइट (स्फटिक)** पत्थर के **क्रोड** (Core) उपकरणों का प्रयोग करता था। इस काल के प्रमुख प्रस्तर उपकरण हस्त कुठार (Hand Axe), विदारिणी (Cleaver), खण्डक (Chopper) व खुरचनी (Scraper) थे। भारत के विभिन्न भागों से पूर्व पुराषाणकाल से संबंधित उपकरण प्राप्त होते हैं। इन्हें दो प्रमुख भागों में विभाजित किया जाता है –

1) **चापार-चापिंग पेबुल संस्कृति** – इस संस्कृति के उपकरण सर्वप्रथम पाकिस्तान के पंजाब स्थित सोहन नदी घाटी से प्राप्त हुए हैं। इसी कारण इसे **सोहन संस्कृति** भी कहा जाता है। सोहन, सिन्धु की सहायक नदी थी। **1928 ई.** में **डी. एन. वाडिया** ने इस क्षेत्र से पूर्व पुरापाषाणकाल का उपकरण प्राप्त किया था। पत्थर के वे टुकड़े, जिनके किनारे पानी के बहाव में रगड़ खाकर चिकने और सपाट हो जाते हैं, पेबुल कहलाते हैं। इनका-आकार-प्रकार, गोल-मटोल होता है। चापर बड़े आकार वाला वह उपकरण है, जो पेबुल से बनाया जाता है। इसके ऊपर एक ही ओर फलक निकालकर धार बनाई गई है। चापिंग उपकरण द्विधारी होते हैं, अर्थात् पेबुल के ऊपर दोनों किनारों को छीलकर उनमें धार बनाई जाती है। सोहन नदी घाटी में स्थित **चौन्तरा** से चापार-चापिंग पेबुल के साथ-साथ हैण्डऐक्स भी प्राप्त हुए हैं। अत: चौन्तरा को उत्तर व दक्षिण पूर्व पुरापाषाणकालीन संस्कृति का मिलन स्थल माना गया है।

सोहन संस्कृति के उपकरण सिरसा व व्यास (हरियाणा), **सिहावल**, बाणगंगा व नर्मदा घाटी (मध्य प्रदेश), सिंगरौली व बेलन नदी घाटी (उत्तर प्रदेश), साबरमती व माही नदी घाटी (गुजरात), चित्तौड़ (राजस्थान), मयूरमंज (उड़ीसा) और गिद्दलूर व नल्लौर नदी घाटी (आन्ध्र प्रदेश) से प्राप्त हुए हैं। इस संस्कृति के उपकरण **कश्मीर घाटी से प्राप्त नहीं** होते, क्योंकि यहां कच्चे माल का अभाव था। साथ ही **गंगा, यमुना एवं सिंधु के कछारी मैदानों में इस संस्कृति के स्थल नहीं** मिलते हैं, क्योंकि यहां घने जंगल थे।

2) **हैण्डऐक्स संस्कृति** – इसके उपकरण सर्वप्रथम मद्रास के समीपवर्ती क्षेत्र (पल्लवरम्, बदमदुरै व अत्तिरपक्कम) से प्राप्त हुए हैं। इसी कारण इसे **मद्रासीय संस्कृति** भी कहा जाता है। सर्वप्रथम **1863 ई.** में **रॉवर्ट ब्रूसफुट** ने मद्रास के समीप **पल्लवरम्** नामक स्थान से **प्रथम भारतीय पुरापाषाण कलाकृति हैण्डऐक्स** प्राप्त किया था। इसके पश्चात् उनके मित्र किंग ने कोर्तलयार घाटी स्थित अत्तिरपक्कम नामक स्थान से दूसरा हैण्डऐक्स प्राप्त किया। इस संस्कृति के अन्य उपकर क्लीवर, स्क्रेपर आदि हैं।

हैण्डऐक्स संस्कृति के उपरकरण नर्मदा व सोन नदी घाटी (मध्य प्रदेश), गोदावरी व उसकी साहायक नदी प्रवरा नदी घाटी (महाराष्ट्र), कृष्णा-तुंगभद्रा नदी घाटी (कर्नाटक), सावरमती व माही नदी घाटी (गुजरात), चम्बल नदी घाटी (राजस्थान), सिंगरौली व बेलन नदी घाटी (उत्तर प्रदेश) से भी प्राप्त होते हैं। **नर्मदा नदी घाटी** में स्थित **हथनोरा** (सिहोर) से मानव की खोपड़ी मिली है, जो **भारत में मानव अवशेष का सर्वप्रथम साक्ष्य** है।

◆ मध्य पुरापाषाणकाल (50 हजार से 40 हजार ई. पू.)

मध्य पुरापाषाणकाल में भी मानव शिकारी व खाद्यसंग्राहक ही था। इस काल में क्वार्टजाइट पत्थर के साथ-साथ जेस्पर, चर्ट, ऐंगट आदि पत्थरों के **फलक/शल्क** (Flaxes) उपकरणों का प्रयोग किया जाने लगा था। इस काल के प्रस्तर उपकरण हस्त कुठार (Hand Axe), विदारिणी (Cleaver), खण्डक (Chopper) व खुरचनी (Scraper) के साथ-साथ बेधनी (Point), तक्षिणी (Burin) आदि थे।

फलक उपकरणों की अधिकता के कारण मध्य पुरापाषाणकाल को **फलक संस्कृति** की संज्ञा दी गई है। **एच. डी. संकालिया** ने प्रवरा नदी घाटी में स्थित **नेवासा** को इस संस्कृति का **प्रारूप स्थल** माना है। इस काल के उपकरण भी पूर्व में उल्लेखित सभी स्थलों से प्राप्त होते हैं। हालांकि उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में उतने स्थल प्राप्त नहीं होते, जितने प्रायद्वीपीय क्षेत्र से प्राप्त होते हैं। इसका प्रमुख कारण पंजाब में उपयुक्त कच्चे माल का अभाव माना जाता है।

महत्वपूर्ण तथ्य

- हथनौरा (मध्य प्रदेश) : मानव खोपड़ी
- भीमबेटका (मध्य प्रदेश) : चित्रकारी, आग का आविष्कार
- नेवासा (महाराष्ट्र) : एच. डी. संकालिया

◆ उच्च पुरापाषाणकाल (40 हजार से 10 हजार ई. पू.)

उच्च पुरापाषाणकाल में भी मानव शिकारी व खाद्यसंग्राहक ही था। इस काल में क्वार्टजाइट, जेस्पर, चर्ट, ऐंगट पत्थर के साथ-साथ फ्लिन्ट, आदि पत्थरों के **ब्लेड** उपकरणों का प्रयोग किया जाने लगा था। इस काल के प्रस्तर उपकरण हस्त कुठार (Hand Axe), विदारिणी (Cleaver), खण्डक (Chopper), **खुरचनी** (Scraper), बेधनी (Point), **तक्षिणी** (Burin) आदि थे।

इस काल में नक्काशी व चित्रकारी दोनों रूपों में कला का विकास हुआ। इलाहाबाद स्थित **वेलन घाटी के लोहदा नाले से** इस काल की **अस्थिनिर्मित मातृदेवी की प्रतिमा** प्राप्त होती है, जो कौशाम्बी संग्रहालय में सुरक्षित है। विन्ध्य क्षेत्र में स्थित **भीमबेटका** (रायसेन, मध्य प्रदेश) के शैलाश्रयों से **विश्व की सबसे प्राचीनतम् चित्रकारी के साक्ष्य** प्राप्त होते हैं, जिनमें मुख्यत: हरे व लाल रंग का प्रयोग किया गया है। यहां से नीले रंग के कुछ पाषाणखण्ड मिलते हैं। वाकणकर महोदय के अनुसार इन नीले पाषाणखण्ड से चित्रकारी के लिए रंग तैयार किया जाता होगा।

इस काल में मानव **चकमक प्रस्तर उपकरणों** का प्रयोग करने लगा था, अर्थात् - वह अग्नि से परिचित तो था, परन्तु उसके प्रयोग से नहीं। सर्वप्रथम इसी काल में आधुनिक मानव **होमोसेपियन** का विकास हुआ।

❐ मध्य पाषाणकाल

महत्वपूर्ण तथ्य

- **पशुपालन :** बागौर एवं आदमगढ़
- **स्तम्भगर्त व चूल्हे :** सराय नाहर राय, महादहा एवं दमदमा
- **युग्मित शवाधान :** महादहा

मध्य पाषाणकाल की जानकारी सर्वप्रथम 1867 ई. में सी. एन. कार्लाइल द्वारा विन्ध्य क्षेत्र में लघु पाषाण उपकरणों की खोज से प्राप्त होती है। इस काल में भी मानव मुख्यत: शिकारी एवं खाद्यसंग्राहक ही था, परन्तु शिकार करने की तकनीक में परिवर्तन आ गया था। इस काल के उपकर छोटे पत्थरों से बने हुए थे, जिन्हें **माइक्रोलिथिक** (सूक्ष्म पाषाण) कहा गया है। लघुपाषाण उपकरणों के अलावा इस काल के प्रमुख उपकरण स्क्रेपर, ब्लेड, क्रोड, बेधनी, त्रिकोण, नवचंद्राकार, समलम्ब त्रिभुज आदि हैं।

इस काल में मानव न केवल बड़े, बल्कि छोटे जानवरों (पक्षी, मछली आदि) का भी शिकार करने लगा था। इसी काल में सर्वप्रथम **तीर-कमान** (प्रक्षेपास्त्र तकनीक) का विकास हुआ।

इस काल में **आदमगढ़** (होशंगाबाद, मध्य प्रदेश) व **बागौर** (भीलवाड़ा, राजस्थान) से 5000 ई. पू. के **पशुपालन के प्राचीनतम् साक्ष्य** प्राप्त होते हैं। मानव द्वारा पालतू बनाया गया पहला पशु कुत्ता था।

इस काल में शैलचित्रों के महत्वपूर्ण स्थल थे - मुरहना पहाड़ (उत्तर प्रदेश), भीमबेटका, लाखाजुआर व आदमगढ़ (मध्य प्रदेश), कुपागल्लू (कर्नाटक) आदि। इनमें से **सर्वाधिक चित्र भीमबेटका के शैलाश्रयों से** प्राप्त हुए हैं।

गंगा घाटी में स्थित **सरायनाहरराय, महादहा, दमदमा** (प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश) नामक स्थल भारत में सबसे प्राचीनतम् मध्य पाषाणकालीन स्थल हैं। इन तीनों स्थलों से **स्तम्भगर्त व गर्तचूल्हों के प्रारंभिक साक्ष्य** मिले हैं। गर्तचूल्हों में पशुओं की हड्डियां जली हुई हैं। इस प्रकार मानव कच्चे मांस को पकाने की प्रक्रिया को अपनाने लगा था। इन तीनों स्थलों से पशुओं की हड्डियों के उपकरण तथा हिरण के सींगों के छल्ले प्राप्त हुए हैं। सरायनाहरराय से मानवीय आक्रमण के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त होते हैं। **महादहा** से **हड्डियों के आभूषण** तथा **युग्मित शवाधान** प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार मध्य पाषाणकाल में ही सर्वप्रथम **शवाधान पद्धति** अस्तित्व में आई।

इस काल में राजस्थान स्थित **सांभर झील** के निक्षेपों से विश्व के **प्राचीनतम् वृक्षारोपण के साक्ष्य** प्राप्त हुए हैं। मध्य पाषाणकालीन महत्वपूर्ण स्थल लंघनाज (गुजरात), टेरी समूह (तमिलनाडु), बीरभानपुर (पश्चिम बंगाल) आदि हैं।

❐ नव पाषाणकाल/नव पाषाण क्रांति

महत्वपूर्ण तथ्य

- **नव क्या :** कृषि, मृदभाण्ड, स्थायी आवास, चाक या पहिये का विकास।

विश्व स्तर पर इस काल की शुरूआत 9000 ई. पू. में हुई, जबकि भारत में इसकी शुरुआत 7000 ई. पू. से मानी जाती है। नव पाषाणकाल शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सर जॉन लुवाक ने 1865 ई. में किया था। नव पाषाणकालीन प्रथम स्थल की खोज सर मेस्यूरर (Mesurror) के द्वारा की गई थी। इस काल की प्रमुख विशेषताएं कृषि कार्य, पशुपालन, पत्थर के औजारों को पॉलिशदार व घर्षित करना, मृद्भांड बनाना, अग्नि के उपयोग का ज्ञान आदि थीं।

पाकिस्तान स्थित **पश्चिमी बलुचिस्तान** प्रांत के **मेहरगढ़** नामक स्थान से **कृषि का प्रारंभिक साक्ष्य** प्राप्त होता है, जिसका काल 7000 ई. पू. है। मेहरगढ़ से गेहूं की 3 एवं जौ की 2 किस्मों की खेती के साक्ष्य मिलते हैं। मेहरगढ़ के द्वितीय काल से गेहूं, जौ, अंगूर एवं कपास की खेती के प्रमाण मिले हैं। इस प्रकार मेहरगढ़ से **कपास उत्पादन के विश्व के सबसे प्राचीन साक्ष्य** भी प्राप्त होते हैं। संभवत: हड़प्पावासियों ने गेहूं, जौ, कपास की खेती मेहरगढ़ के पूर्वजों से ही सिखी थी। **विश्व की प्राचीनत्म फसल जौ** को माना जाता है।

मेहरगढ़ को **बलुचिस्तान की रोटी की टोकरी** कहा जाता है। इस प्रकार मेहरगढ़ से भारत में **स्थायी निवास का प्राचीनतम् साक्ष्य** भी प्राप्त होता है। हाल ही में **लहुरादेव** (संत कबीर जिला, उत्तर प्रदेश) से 9000 ई. पू. –8000 ई. पू. के खेती के सबसे प्राचीनत्म साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, परन्तु अभी यह शोध का विषय है। **मेहरगढ़** से पशुपालन के भी साक्ष्य प्राप्त होते हैं, यहां से भारतीय महाद्वीप में **पालतू भैंसे का प्राचीनतम् साक्ष्य** प्राप्त होता है। मेहरगढ़ से **पाषाणयुग से लेकर हड़प्पा संस्कृति तक के सांस्कृतिक अवशेष** प्राप्त होते हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य

- मेहरगढ़ : कृषि (जौ, गेहूं, कपास), स्थायी आवास, पालतू भैंस।
- चौपानीमाण्डो : मृदभाण्ड
- कोल्डीहवा : धान
- बुर्जहोम : गर्तनिवास एवं मालिक के साथ कुत्ते के दफनाए जाने के साक्ष्य
- गुफ्फकराल : गर्तनिवास

उत्तर प्रदेश स्थित बेलन घाटी (मिर्जापुर) के **कोल्डीहवा** नामक स्थान से **वन्य एवं कृषिजन्य दोनों प्रकार की धान की खेती के प्राचीनतम् साक्ष्य** प्राप्त हुए हैं, जिसका समय 5000 ई. पू. (चौथी सहस्त्राब्दी ई. पू.) माना जा सकता है। बेलन घाटी में स्थित **चौपानीमांडो** नामक स्थान से **चाक् निर्मित मृदभाण्डों के प्राचीनतम् साक्ष्य** प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार **बैलगाड़ी के पहिये के प्राचीनतम् साक्ष्य** नव पाषाणकाल से ही प्राप्त होते हैं। महागरा (उत्तर प्रदेश) से गौशाला तथा धान व जौ के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं। बिहार स्थित चीरान्द, सेनुवार, चैचर, ताराडीह महत्वपूर्ण नव पाषाणकालीन स्थल है। इनमें से **चीरान्द** से **हिरण के सिंगों से निर्मित छल्ले** (मृगशृंग छल्ले) प्राप्त हुए हैं।

कश्मीर स्थित **बुर्जहोम** तथा **गुफ्फकराल** नव पाषाणकालीन महत्वपूर्ण स्थल हैं, जिनकी खोज क्रमशः टेरी व पीटरसन तथा शर्मा ने की थी। इन दोनों स्थलों से **गर्तनिवास**, मृदभाण्ड की विविधता, कृषि उत्पादन, पशुपालन तथा प्रस्तर व अस्थि उपकरण के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। ज्ञात रहे कि इन दोनों स्थलों से सूक्ष्म प्रस्तर उपकरण बहुत कम प्राप्त हुए हैं। **बुर्जहोम** से **मालिक के साथ कुत्ते को दफनाए जाने का साक्ष्य** प्राप्त हुआ है। **गुफ्फकराल** से **मृदभांडरहित गर्तनिवास के साक्ष्य** प्राप्त होते हैं।

दक्षिण भारत स्थित मास्की, ब्रह्मगिरी, हल्लूर, कोडक्कल, पीकलीहल, संगेनकल्लू, टेक्कलकोट्टा व कुपागल्लू (कर्नाटक), उतनूर (आन्ध्र), पोचमपल्ली (तमिलनाडु) आदि नवपाषाणकालीन स्थल है, जो 9000 ई. पू. – 2600 ई. पू. से संबंधित हैं। इनमें से **कोडक्कल, संगेनकल्लू, उतनूर, कुपागल्लू** आदि स्थलों से **राख के टीले** (अंश टीले) प्राप्त हुए हैं। दक्षिण भारत से प्राप्त **पहली फसल रागी** (मिलेट) व दूसरी फसल कुलथी थी। यहां से चावल, गेहूं व जौ के साक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं।

ताम्रपाषाण काल (2000 - 500 ई. पू.)

ताम्रपाषाण काल को अंग्रेजी में **Chalcolithic Age** कहते हैं। **मनुष्य द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली प्रथम धातु तांबा थी।** इस काल में प्रस्तर तांबा के साथ-साथ निम्न गुणवत्तायुक्त कांसे का भी प्रयोग होता था। ताम्र संचय का सबसे प्रथम साक्ष्य 1822 ई. में कानपुर (उत्तर प्रदेश) के पास बिठुर से ताम्र मत्स्य भाले के रूप में प्राप्त हुआ है। परन्तु ताम्र संचय का सबसे बड़ा भण्डार (424 ताम्र उपकरण) मध्य प्रदेश के गंगेरिया नामक स्थान से प्राप्त हुआ है। अब तक ताम्र संचय के कुल 85 स्थान प्रकाश में आए हैं, जिनमें सर्वाधिक स्थल उत्तर प्रदेश से प्राप्त हुए हैं।

- **आहार/गिलुन्द/बनास संस्कृति (3000 ई. पू. - 1500 ई. पू.) -** राजस्थान के दक्षिण-पूर्व में बनास नदी घाटी में बनास संस्कृति का विकास हुआ। इस संस्कृति की मुख्य विशेषताओं को दर्शाने वाले स्थल आहार के नाम पर इसे आहार संस्कृति भी कहा जाता है। आहार को **ताम्रवती** कहा गया है, क्योंकि यहां से पत्थर के बजाय ज्यादातर तांबे के ही औजार प्राप्त हुए।

महत्वपूर्ण तथ्य

-	मालवा संस्कृति	: उत्कृष्ट मृदभांड
-	जोरवे संस्कृति	: द्वि-स्तरीय निवास
-	नावदाटोली	: सर्वाधिक अन्न
-	ईनामगांव	: किलेबंदी
-	दायमाबाद	: सबसे बड़ी बस्ती,
		: कलश शवाधान

आहार के उत्तर-पूर्व में स्थित गिलून्द से भी पत्थरों के नगण्य उपयोग तथा ईंटों के अधिक प्रयोग के साक्ष्य प्राप्त हुए। गिलून्द से फलक उद्योग भी प्राप्त हुए हैं। एच. डी. संकालिया के द्वारा किए गए उत्खनन में यहां से अग्निकुण्ड का साक्ष्य भी मिला है।

- **कायथा संस्कृति (2000 ई. पू. - 1800 ई. पू.) -** 1664 ई. में वी. एस. वाकड़कर द्वारा कायथा संस्कृति को प्रकाश में लाया गया। कायथा संस्कृति **हड़प्पा संस्कृति की कनिष्ठ समकालीन** मानी जाती है। यहां के कुछ मृदभांडों पर प्राक् हड़प्पाई तथा कुछ पर हड़प्पाई प्रभाव दिखाई देता है।
- **स्वाल्दा संस्कृति (2000 ई. पू. - 1800 ई. पू.) -** यह संस्कृति ताप्ती नदी घाटी में स्थित थी।
- **एरण/नवदाटोली/नागदा/मालवा संस्कृति (1700 ई. पू. - 1200 ई. पू.) -** मालवा संस्कृति अपने मृदभांडों (चित्रित काले व लाल मृदभांड) की उत्कृष्टता के लिए जाने जाते हैं। मालवा संस्कृति के लोग कटाई, बुनाई में भी दक्ष थे। यहां से चरखे तथा तकलियों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। **एच. डी. संकालिया द्वारा उत्खनित नवदाटोली** मालवा संस्कृति का सबसे विस्तृत ताम्रपाषाणकालीन ग्रामीण स्थल है। यहां से सर्वाधिक फसलों की संख्या प्राप्त हुई है।
- **जोरवे संस्कृति (1400 ई. पू. - 700 ई. पू.) -** जोरवे संस्कृति के अन्तर्गत प्रमुख स्थल महाराष्ट्र में गोदावरी व उसकी सहायक प्रवरा नदी घाटी में स्थित - जोरवे, नेवासा, दायमाबाद ईनामगांव, प्रकाश, चंदोली आदि हैं। इस संस्कृति की सर्वप्रमुख विशेषता **पूर्ण शवाधान** एवं **कलश शवाधान** पद्धति है। यहां घरों के फर्श के नीचे **बड़ी संख्या में बच्चों के शवों** के साथ कलश भी दफनाए जाते थे, जिनमें मृतक की आवश्यकता की वस्तुएं रखी जाती थीं। यहां मृतक को **उत्तर-दक्षिण दिशा** में दफनाया जाता था। जबकि उत्तर भारत में आंशिक समाधान पद्धति थी। इस संस्कृति के शवाधानों से प्राप्त अस्थियों के अध्ययन से वयस्कों व शिशुओं में दंतक्षरण तथा शिशुओं में स्कर्बी रोग का पता चलता है।